Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

Original Article

सिरपुर का पुरातात्विक वैभव: हिंदू एवं बौद्ध स्मारकों का पर्यटन एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

अविनाश सिंह ठाकुर [1] **डॉ मंजू साहू** [2]
[1]शोधार्थी
[2]सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग, डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
Email-geeteshsahu1974@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180312
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 3(A)
Pp. 66-74
March- 2026
Submitted: 20 Feb. 2026
Revised: 02 Mar. 2026
Accepted: 10 Mar. 2026
Published: 31 Mar. 2026

सारांश –

छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुंद जिले में महानदी के तट पर स्थित प्राचीन नगर सिरपुर, जिसका प्राचीन नाम **श्रीपुर** था, भारतीय इतिहास और संस्कृति की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल के रूप में प्रतिष्ठित है। यह नगर प्राचीन काल में **दक्षिण कोसल** क्षेत्र की राजधानी के रूप में विकसित हुआ था और छठी से आठवीं शताब्दी के मध्य यहाँ राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का उल्लेखनीय उत्कर्ष देखने को मिलता है। विशेष रूप से पांडुवंशी शासकों के शासनकाल में इस क्षेत्र में मंदिर स्थापत्य, बौद्ध विहारों, मठों और सांस्कृतिक संस्थानों का व्यापक विकास हुआ, जिसने इसे मध्य भारत के एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र के रूप में स्थापित किया।

सिरपुर की पुरातात्विक खुदाइयों से प्राप्त मंदिरों, विहारों, मूर्तियों, शिलालेखों तथा अन्य अवशेषों से यह स्पष्ट होता है कि यह नगर केवल राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि धार्मिक और शैक्षिक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध था। यहाँ स्थित लक्ष्मण मंदिर भारतीय मंदिर स्थापत्य की एक विशिष्ट कृति है, जो ईंटों से निर्मित प्राचीन मंदिर वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसकी स्थापत्य योजना, द्वारशाखाओं की सूक्ष्म नक्काशी तथा धार्मिक प्रतीकात्मकता तत्कालीन शिल्पकला की उच्च परंपरा को अभिव्यक्त करती है।

इसके अतिरिक्त यहाँ पाए गए बौद्ध स्मारक विशेषकर आनंद प्रभु कुटी विहार और स्वस्तिक विहार इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के व्यापक प्रभाव और उसके संस्थागत विकास का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। इन विहारों की संरचना, योजना तथा स्थापत्य शैली से यह स्पष्ट होता है कि सिरपुर प्राचीन काल में बौद्ध धर्म के अध्ययन और साधना का महत्वपूर्ण केंद्र था।

इसमें सिरपुर के स्मारकों का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा पर्यटनात्मक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि यहाँ विभिन्न धार्मिक परंपराओं विशेषतः हिंदू और बौद्ध धर्म का सहअस्तित्व दिखाई देता है, जो भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी और सहिष्णु परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण है।

वर्तमान समय में सिरपुर के पुरातात्विक अवशेष न केवल इतिहासकारों और शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण अध्ययन सामग्री प्रदान करते हैं, बल्कि पर्यटन की दृष्टि से भी अत्यंत संभावनाशील हैं। निरंतर हो रहे उत्खनन, सांस्कृतिक आयोजनों और सरकारी संरक्षण प्रयासों के कारण इस स्थल की पहचान राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ रही है। साथ ही इसे भविष्य में विश्व धरोहर के रूप में मान्यता मिलने की संभावनाएँ भी व्यक्त की जाती रही हैं।

यदि सिरपुर के ऐतिहासिक स्मारकों का व्यवस्थित संरक्षण किया जाए और पर्यटन अवसंरचना को सुदृढ़ बनाया जाए, तो यह क्षेत्र भारतीय सांस्कृतिक पर्यटन के मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकता है।

कीवर्ड: श्रीपुर, प्राचीन छत्तीसगढ़ क्षेत्र का ऐतिहासिक प्रान्त, सोमवंश का समय, प्राचीन उत्खनन केंद्र, ऐतिहासिक धरोहर स्थल, ईंटों निर्मित प्राचीन देवालय, बौद्ध मठ, राज्य का पर्यटन स्थल।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
अविनाश सिंह ठाकुर, शोधार्थी

How to cite this article:
ठाकुर, . अविनाश . सिंह ., & साहू, . मंजू . (2026). सिरपुर का पुरातात्विक वैभव: हिंदू एवं बौद्ध स्मारकों का पर्यटन एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन. Journal of Research & Development, 18(3 (A)), 66–74. https://doi.org/10.5281/zenodo.19607205

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.19607205
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

प्रस्तावना –

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि - छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपरा अत्यंत प्राचीन तथा समृद्ध रही है। इस क्षेत्र की धरती पर अनेक सभ्यताओं का विकास हुआ, जिनकी स्मृतियाँ आज भी यहाँ के पुरातात्विक स्थलों, मंदिरों, मूर्तियों और अभिलेखों में सुरक्षित हैं। इन्हीं ऐतिहासिक धरोहरों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राचीन नगर सिरपुर का है। प्राचीन साहित्य, शिलालेखों तथा ऐतिहासिक अभिलेखों में इस नगर का उल्लेख 'श्रीपुर' नाम से मिलता है। वर्तमान समय में यह स्थान छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुंद जिले में स्थित है और महानदी के पावन तट पर अवस्थित होने के कारण प्राचीन काल से ही धार्मिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है।

इतिहासकारों और पुरातत्वविदों के अनुसार सिरपुर केवल एक सामान्य नगर नहीं था, बल्कि यह प्राचीन काल में **दक्षिण कोसल** क्षेत्र का एक प्रमुख राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र था। दक्षिण कोसल का उल्लेख विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों, पुराणों तथा यात्रावृत्तांतों में मिलता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र प्राचीन भारत के महत्वपूर्ण राज्यों में से एक था। इस राज्य की राजधानी के रूप में सिरपुर ने लंबे समय तक प्रशासनिक, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन किया। महानदी के तट पर स्थित होने के कारण यह नगर प्राकृतिक संसाधनों, जल परिवहन तथा व्यापारिक संपर्कों की दृष्टि से भी अत्यंत अनुकूल स्थान पर विकसित हुआ।

पुरातात्विक उत्खननों और ऐतिहासिक अध्ययनों से यह तथ्य सामने आता है कि सिरपुर का विशेष विकास **छठी से आठवीं शताब्दी** के मध्य हुआ। इस समय यहाँ **पांडुवंशी शासकों** का शासन था, जिन्होंने इस क्षेत्र के राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पांडुवंशी राजाओं के संरक्षण में सिरपुर में स्थापत्य कला, धार्मिक गतिविधियों तथा सांस्कृतिक जीवन का व्यापक विस्तार हुआ। इस काल में अनेक भव्य मंदिरों, मठों और विहारों का निर्माण कराया गया, जो उस समय की समृद्ध कला और स्थापत्य परंपरा के प्रमाण हैं। इन स्मारकों से यह भी स्पष्ट होता है कि शासक वर्ग कला और धर्म के संरक्षण के प्रति अत्यंत सजग था।

सिरपुर की एक विशिष्ट विशेषता यह भी रही है कि यहाँ विभिन्न धार्मिक परंपराओं का शांतिपूर्ण सहअस्तित्व दिखाई देता है। पुरातात्विक प्रमाणों से यह ज्ञात होता है कि यहाँ हिंदू धर्म के मंदिरों के साथ-साथ बौद्ध धर्म से संबंधित विहार और मठ भी विद्यमान थे। इससे यह संकेत मिलता है कि यह नगर केवल धार्मिक आस्था का केंद्र ही नहीं था, बल्कि विभिन्न दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारधाराओं के संवाद का भी महत्वपूर्ण स्थल था। इस प्रकार सिरपुर भारतीय संस्कृति की उस समन्वयवादी परंपरा को दर्शाता है जिसमें विविध धार्मिक मान्यताओं के बीच सहिष्णुता और सहयोग की भावना विद्यमान रही है।

सिरपुर में समय-समय पर किए गए पुरातात्विक उत्खननों से अनेक महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हुए हैं। इन अवशेषों में प्राचीन मंदिरों के भग्न भाग, बौद्ध विहारों के अवशेष, विभिन्न देवताओं की मूर्तियाँ, शिलालेख, स्तंभ तथा अन्य स्थापत्य संरचनाएँ शामिल हैं। इन खोजों से यह प्रमाणित होता है कि सिरपुर प्राचीन काल में कला, धर्म, शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों का एक समृद्ध और संगठित केंद्र था। यहाँ प्राप्त मूर्तिकला और स्थापत्य कला के नमूने उस समय के शिल्पकारों की उच्च कलात्मक क्षमता और तकनीकी दक्षता को भी प्रदर्शित करते हैं।

इसके अतिरिक्त, कुछ ऐतिहासिक यात्रावृत्तांतों और परंपरागत कथाओं में भी सिरपुर का उल्लेख मिलता है, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि यह नगर न केवल स्थानीय बल्कि बाहरी क्षेत्रों के लोगों के लिए भी आकर्षण का केंद्र रहा होगा। व्यापारिक मार्गों और सांस्कृतिक संपर्कों के माध्यम से यहाँ विभिन्न क्षेत्रों के लोगों का आगमन होता रहा, जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि में वृद्धि हुई।

इस स्थान के संस्कृति, धर्म और कला के विकास को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही, यह स्थल छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक पहचान को भी उजागर करता है।

इस प्रकार सिरपुर केवल एक प्राचीन नगर का अवशेष नहीं है, बल्कि यह भारतीय इतिहास और संस्कृति के विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। यहाँ के पुरातात्विक प्रमाण और ऐतिहासिक साक्ष्य इस बात को स्पष्ट करते हैं कि प्राचीन काल में यह नगर राजनीतिक शक्ति, धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक उन्नति का एक प्रमुख केंद्र था।

धार्मिक सहअस्तित्व और सांस्कृतिक समन्वय

सिरपुर की ऐतिहासिक पहचान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष यहाँ विद्यमान **धार्मिक सहअस्तित्व और सांस्कृतिक समन्वय** है। प्राचीन काल में यह नगर केवल किसी एक धार्मिक परंपरा का केंद्र नहीं था, बल्कि विभिन्न आस्थाओं और आध्यात्मिक विचारधाराओं के शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। सिरपुर के पुरातात्विक अवशेषों और ऐतिहासिक प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म तथा अन्य धार्मिक परंपराएँ एक ही भौगोलिक क्षेत्र में विकसित हुईं और समय के साथ एक समृद्ध सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण हुआ।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

सिरपुर में प्राप्त मंदिरों और विहारों के अवशेष यह संकेत देते हैं कि इस क्षेत्र में धार्मिक गतिविधियाँ अत्यंत व्यापक और विविध थीं। एक ओर यहाँ हिंदू धर्म से संबंधित अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ, जो उस समय की धार्मिक आस्था और स्थापत्य कौशल को अभिव्यक्त करते हैं। दूसरी ओर, बौद्ध धर्म से संबंधित विहारों, मठों और अन्य संरचनाओं के अवशेष भी बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं, जो यह प्रमाणित करते हैं कि सिरपुर बौद्ध धर्म के अनुयायियों और भिक्षुओं के लिए भी एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

यह धार्मिक विविधता इस बात को स्पष्ट करती है कि प्राचीन काल में सिरपुर का सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण अत्यंत उदार तथा सहिष्णु था। विभिन्न धर्मों के अनुयायी यहाँ बिना किसी संघर्ष के अपने-अपने धार्मिक अनुष्ठानों और परंपराओं का पालन करते थे। इस प्रकार सिरपुर भारतीय संस्कृति की उस परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें विविधता के भीतर एकता की भावना विद्यमान रही है। धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय की यही विशेषता इस क्षेत्र को ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती है।

सिरपुर में स्थित **लक्ष्मण मंदिर** इस क्षेत्र की स्थापत्य परंपरा का सबसे प्रमुख और उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। यह मंदिर ईंटों से निर्मित प्राचीन भारतीय मंदिर वास्तुकला का एक अद्वितीय नमूना है। इसकी संरचना, अलंकरण तथा शिल्पकला उस समय के शिल्पकारों की उच्च तकनीकी दक्षता और कलात्मक अभिरुचि को दर्शाती है। मंदिर की दीवारों और द्वारों पर की गई सूक्ष्म नक्काशी, पौराणिक कथाओं से संबंधित मूर्तियाँ तथा अलंकरण इस बात का प्रमाण हैं कि उस समय धार्मिक स्थापत्य के साथ-साथ कला और सौंदर्यबोध को भी विशेष महत्व दिया जाता था।

लक्ष्मण मंदिर के अतिरिक्त सिरपुर में अन्य कई हिंदू मंदिरों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं, जो यह संकेत देते हैं कि यह क्षेत्र हिंदू धार्मिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। इन मंदिरों की स्थापत्य शैली, निर्माण सामग्री तथा कलात्मक सजावट से यह ज्ञात होता है कि उस समय मंदिर निर्माण की परंपरा अत्यंत विकसित अवस्था में थी और इसमें स्थानीय शिल्पकारों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

इसके साथ ही सिरपुर में प्राप्त **बौद्ध विहारों** और मठों के अवशेष यह दर्शाते हैं कि यह नगर बौद्ध धर्म के अध्ययन, साधना और प्रचार-प्रसार का भी एक प्रमुख केंद्र रहा है। इन विहारों में भिक्षुओं के निवास के लिए कक्ष, प्रार्थना स्थलों की व्यवस्था तथा अध्ययन के लिए उपयुक्त स्थान निर्मित किए गए थे। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ बौद्ध भिक्षु दीर्घकाल तक निवास करते थे और बौद्ध दर्शन तथा शिक्षाओं का अध्ययन एवं प्रसार करते थे।

बौद्ध विहारों की स्थापत्य योजना भी अत्यंत सुव्यवस्थित थी, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय के वास्तुकार नगर नियोजन और धार्मिक स्थापत्य के सिद्धांतों से भली-भाँति परिचित थे। इन विहारों में प्राप्त मूर्तियाँ और अन्य अवशेष बौद्ध कला की समृद्ध परंपरा को भी उजागर करते हैं।

इस प्रकार सिरपुर में हिंदू मंदिरों और बौद्ध विहारों की संयुक्त उपस्थिति यह प्रमाणित करती है कि यह नगर प्राचीन काल में विभिन्न धार्मिक विचारधाराओं के संवाद और सहअस्तित्व का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। यहाँ की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता भारतीय समाज की उस व्यापक परंपरा को दर्शाती है जिसमें विभिन्न आस्थाएँ परस्पर सम्मान और सहिष्णुता के साथ विकसित होती रही हैं।

सिरपुर केवल एक पुरातात्विक स्थल नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति के **धार्मिक समन्वय, सहिष्णुता और बहुलतावादी परंपरा** का जीवंत प्रतीक है। यहाँ के मंदिरों और विहारों के अवशेष इस बात का प्रमाण हैं कि प्राचीन काल में यह नगर न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र था, बल्कि सांस्कृतिक समृद्धि और आध्यात्मिक संवाद का भी महत्वपूर्ण स्थल रहा है।

भौगोलिक और आर्थिक महत्व

सिरपुर के ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए उसके **भौगोलिक स्वरूप और स्थानिक स्थिति** का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। यह प्राचीन नगर महानदी के तट पर स्थित है, जिसने इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महानदी केवल जल का स्रोत ही नहीं थी, बल्कि प्राचीन काल में यह परिवहन, व्यापार और सांस्कृतिक संपर्क का एक प्रमुख माध्यम भी थी। नदी के किनारे स्थित होने के कारण सिरपुर प्राकृतिक रूप से एक ऐसे केंद्र के रूप में विकसित हुआ जहाँ आसपास के क्षेत्रों से लोगों का निरंतर आवागमन बना रहता था।

प्राचीन समय में नदियाँ व्यापारिक मार्गों के रूप में अत्यधिक उपयोगी होती थीं। महानदी के माध्यम से सिरपुर का संपर्क दूरस्थ क्षेत्रों से स्थापित था, जिससे इस नगर में व्यापारिक गतिविधियाँ निरंतर बढ़ती रहीं। जलमार्गों के अतिरिक्त स्थलमार्गों का भी विकास हुआ, जिसके कारण व्यापारी, यात्री, साधु-संत और विद्वान विभिन्न क्षेत्रों से यहाँ आते-जाते थे। इस प्रकार सिरपुर केवल एक स्थानीय नगर न होकर व्यापक क्षेत्रीय संपर्क का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया था।

व्यापारिक संपर्कों के कारण यहाँ वस्तुओं का आदान-प्रदान भी व्यापक रूप से होता था। विभिन्न क्षेत्रों से व्यापारी यहाँ आकर अपने उत्पादों का विनिमय करते थे, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली। कृषि उत्पाद, हस्तशिल्प, धातु वस्तुएँ तथा अन्य उपयोगी सामग्री का व्यापार इस क्षेत्र में प्रचलित रहा होगा। इस प्रकार व्यापारिक गतिविधियों ने सिरपुर को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आर्थिक समृद्धि का प्रभाव यहाँ के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जब किसी नगर की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है, तो वहाँ कला, स्थापत्य और धार्मिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिलता है। सिरपुर में भी यही स्थिति देखने को

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

मिलती है। व्यापार से प्राप्त संपन्नता के कारण यहाँ के शासकों तथा समाज के संपन्न वर्गों ने मंदिरों, मठों और विहारों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सिरपुर में निर्मित मंदिरों और बौद्ध विहारों की भव्यता इस बात का प्रमाण है कि उस समय यह नगर आर्थिक रूप से समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से उन्नत था। इन स्थापत्य संरचनाओं में प्रयुक्त निर्माण तकनीक, कलात्मक अलंकरण और सुव्यवस्थित योजना उस समय के शिल्पकारों की दक्षता तथा संसाधनों की उपलब्धता को दर्शाती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि सिरपुर में स्थापत्य निर्माण केवल धार्मिक आस्था का परिणाम नहीं था, बल्कि यह उस समय की आर्थिक समृद्धि और सामाजिक विकास का भी प्रतीक था।

इसके अतिरिक्त सिरपुर का भौगोलिक स्थान विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों के मध्य स्थित होने के कारण सांस्कृतिक आदान-प्रदान का भी माध्यम बना। यहाँ आने वाले व्यापारी, यात्री और विद्वान अपने साथ विभिन्न परंपराएँ, विचार और सांस्कृतिक प्रभाव लेकर आते थे। परिणामस्वरूप सिरपुर का सांस्कृतिक वातावरण बहुआयामी और समृद्ध बनता गया।

अतः यह कहा जा सकता है कि सिरपुर की भौगोलिक स्थिति और व्यापारिक संपर्कों ने इसके आर्थिक विकास को गति प्रदान की। यही आर्थिक समृद्धि आगे चलकर यहाँ के धार्मिक, सांस्कृतिक और स्थापत्य विकास का आधार बनी। महानदी के तट पर स्थित यह नगर इस प्रकार प्राचीन काल में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ।

सिरपुर का स्थापत्य वैभव: हिंदू एवं बौद्ध स्मारकों का विश्लेषण

छत्तीसगढ़ के प्राचीन ऐतिहासिक नगर **सिरपुर** में प्राप्त स्थापत्य अवशेष इस बात के सशक्त प्रमाण हैं कि यह क्षेत्र प्राचीन काल में कला, धर्म, शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यहाँ के मंदिरों, विहारों, मठों और अन्य पुरातात्विक संरचनाओं का अध्ययन करने से उस समय की वास्तुकला, शिल्पकला तथा धार्मिक जीवन की समृद्ध परंपरा का स्पष्ट परिचय मिलता है। सिरपुर में पाए जाने वाले स्थापत्य अवशेष केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे उस युग की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों को भी अभिव्यक्त करते हैं।

पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त संरचनाएँ यह संकेत देती हैं कि सिरपुर में स्थापत्य निर्माण अत्यंत योजनाबद्ध और कलात्मक ढंग से किया जाता था। मंदिरों और विहारों की संरचना, उनके निर्माण में प्रयुक्त सामग्री, अलंकरण की शैली तथा स्थापत्य योजना उस समय के शिल्पकारों की उच्च तकनीकी दक्षता और कलात्मक दृष्टि को दर्शाती है। इन स्मारकों के माध्यम से यह भी ज्ञात होता है कि उस काल में धर्म और संस्कृति का समाज के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान था।

सिरपुर की स्थापत्य परंपरा का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि यहाँ विभिन्न धार्मिक परंपराओं से संबंधित स्मारक एक साथ विकसित हुए। इस कारण सिरपुर की स्थापत्य धरोहर को सामान्यतः दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित करके समझा जाता है—**हिंदू मंदिर स्थापत्य** और **बौद्ध विहार स्थापत्य**। इन दोनों स्थापत्य परंपराओं का विकास यहाँ समानांतर रूप से हुआ, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय समाज में धार्मिक सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान की भावना विद्यमान थी।

हिंदू मंदिर स्थापत्य के अंतर्गत सिरपुर में अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ, जिनमें लक्ष्मण मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस प्रकार के मंदिरों की स्थापत्य योजना, अलंकरण और मूर्तिकला भारतीय मंदिर वास्तुकला की उन्नत परंपरा को दर्शाती है। दूसरी ओर बौद्ध विहार स्थापत्य भी यहाँ व्यापक रूप से विकसित हुआ, जिसके अवशेष यह संकेत देते हैं कि सिरपुर बौद्ध धर्म के अध्ययन और साधना का एक प्रमुख केंद्र था।

इन दोनों स्थापत्य परंपराओं का एक ही क्षेत्र में विकसित होना इस बात का द्योतक है कि सिरपुर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं था, बल्कि यह एक ऐसा सांस्कृतिक केंद्र था जहाँ विभिन्न धार्मिक विचारधाराएँ परस्पर सहअस्तित्व में विकसित हुईं। यहाँ के मंदिर और विहार न केवल धार्मिक गतिविधियों के केंद्र थे, बल्कि वे शिक्षा, ज्ञान-विनिमय और सांस्कृतिक संवाद के भी महत्वपूर्ण स्थल थे।

इस प्रकार सिरपुर की स्थापत्य धरोहर भारतीय संस्कृति की उस समन्वयवादी परंपरा को उजागर करती है, जिसमें विभिन्न धर्मों और सांस्कृतिक विचारों को समान सम्मान दिया जाता था। यहाँ के हिंदू और बौद्ध स्मारकों का अध्ययन हमें न केवल प्राचीन वास्तुकला और शिल्पकला की उत्कृष्टता से परिचित कराता है, बल्कि यह भी बताता है कि उस समय समाज में सांस्कृतिक सहअस्तित्व और धार्मिक उदारता की कितनी गहरी परंपरा विद्यमान थी।

हिंदू स्थापत्य कला

सिरपुर में विकसित हिंदू मंदिर स्थापत्य भारतीय वास्तुकला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ निर्मित मंदिर न केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं, बल्कि वे प्राचीन भारतीय शिल्पकला, स्थापत्य योजना और कलात्मक अभिव्यक्ति के उत्कृष्ट उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं। सिरपुर में प्राप्त मंदिरों की संरचना और उनके निर्माण की तकनीक से यह स्पष्ट होता है कि उस समय के शिल्पकार

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

वास्तुकला के सिद्धांतों और निर्माण विधियों से भली-भाँति परिचित थे। इन मंदिरों में सौंदर्य और उपयोगिता दोनों का संतुलित समन्वय दिखाई देता है, जो प्राचीन भारतीय स्थापत्य परंपरा की प्रमुख विशेषता रही है।

सिरपुर के हिंदू मंदिरों की एक विशेष पहचान यह है कि इनके निर्माण में पत्थर के स्थान पर लाल रंग की पकी हुई ईंटों का व्यापक उपयोग किया गया है। सामान्यतः प्राचीन मंदिरों के निर्माण में पत्थर प्रमुख सामग्री के रूप में प्रयुक्त होता था, किंतु सिरपुर के मंदिरों में ईंटों से इतनी सुदृढ़ और कलात्मक संरचनाएँ निर्मित की गईं कि वे आज भी स्थापत्य कौशल का अद्वितीय उदाहरण मानी जाती हैं। इन ईंटों को अत्यंत सावधानी से तराशकर और क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करके मंदिरों की दीवारें, आधार और अन्य भाग निर्मित किए गए थे। कई स्थानों पर ईंटों के साथ पत्थर का भी सीमित उपयोग अलंकरण और मूर्तिकला के लिए किया गया है, जिससे मंदिरों की सुंदरता और भी अधिक बढ़ जाती है।

सिरपुर के मंदिरों की स्थापत्य योजना से यह भी स्पष्ट होता है कि इनके निर्माण में केवल धार्मिक उद्देश्यों को ही नहीं, बल्कि सौंदर्यात्मक दृष्टि और स्थापत्य संतुलन को भी विशेष महत्व दिया गया था। मंदिरों के गर्भगृह, मंडप, प्रवेश द्वार और शिखर की संरचना अत्यंत व्यवस्थित ढंग से निर्मित की गई है। इसके अतिरिक्त मंदिरों की दीवारों पर की गई नक्काशी और अलंकरण उस समय की मूर्तिकला परंपरा की समृद्धि को भी प्रकट करते हैं।

लक्ष्मण मंदिर

सिरपुर में स्थित लक्ष्मण मंदिर इस क्षेत्र का सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण हिंदू स्मारक माना जाता है। यह मंदिर अपनी स्थापत्य योजना, निर्माण शैली और कलात्मक अलंकरण के कारण भारतीय मंदिर वास्तुकला के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखता है। इतिहासकारों के अनुसार इस मंदिर का निर्माण सातवीं शताब्दी के लगभग पांडुवंशी शासकों के काल में हुआ था। उपलब्ध अभिलेखों से यह ज्ञात होता है कि इसका निर्माण रानी वासटा ने अपने पति राजा हर्षगुप्त की स्मृति में करवाया था। इस प्रकार यह मंदिर न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि तत्कालीन राजवंश की सांस्कृतिक और धार्मिक निष्ठा का भी परिचायक है।

वास्तुकला की दृष्टि से लक्ष्मण मंदिर अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका निर्माण 'पंचरथ' शैली में किया गया है, जिसमें मंदिर की बाहरी दीवारों को पाँच भागों में विभाजित कर अलंकृत किया जाता है। इस मंदिर की संरचना में गर्भगृह, मंडप तथा ऊँचा शिखर प्रमुख भाग हैं। गर्भगृह वह स्थान है जहाँ मुख्य देवता की प्रतिमा स्थापित की जाती है, जबकि मंडप श्रद्धालुओं के एकत्र होने और पूजा-अर्चना के लिए बनाया जाता है। इन दोनों भागों की योजना अत्यंत संतुलित और सुव्यवस्थित है, जो उस समय की स्थापत्य समझ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को दर्शाती है।

मंदिर के प्रवेश द्वार की द्वारशाखाएँ विशेष रूप से आकर्षक हैं। इन पर पत्थर की अत्यंत सुंदर और सूक्ष्म नक्काशी की गई है, जिसमें भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों तथा अनेक पौराणिक कथाओं से जुड़े दृश्य अंकित किए गए हैं। इन मूर्तियों की कलात्मकता इतनी प्रभावशाली है कि वे प्राचीन भारतीय मूर्तिकला की उत्कृष्टता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती हैं। इसके अतिरिक्त मंदिर की दीवारों और स्तंभों पर भी अनेक सजावटी रूपांकन दिखाई देते हैं, जो उस समय के कलाकारों की कल्पनाशीलता और तकनीकी दक्षता का परिचय देते हैं।

अन्य हिंदू मंदिर

इस स्थल के मंदिरों के भग्नावशेष यह संकेत देते हैं कि प्राचीन काल में सिरपुर एक समृद्ध धार्मिक केंद्र था, जहाँ विभिन्न देवी-देवताओं की उपासना की जाती थी।

इन मंदिरों में **गंधेश्वर महादेव मंदिर** विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह मंदिर महानदी के तट के समीप स्थित है और शैव परंपरा से संबंधित एक प्रमुख धार्मिक स्थल माना जाता है। इस मंदिर की विशेषता यह है कि इसके निर्माण में विभिन्न कालखंडों की मूर्तियों, स्तंभों और शिलाखंडों का उपयोग किया गया है। यहाँ स्थापित शिवलिंग और अन्य मूर्तियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि सिरपुर में शैव धर्म का भी व्यापक प्रभाव था।

इसके अतिरिक्त सिरपुर में **राम मंदिर** तथा अन्य छोटे-बड़े मंदिरों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। यद्यपि इन मंदिरों का अधिकांश भाग समय के साथ नष्ट हो चुका है, फिर भी उनके अवशेषों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वे भी कभी अत्यंत भव्य और कलात्मक रहे होंगे। इन मंदिरों की स्थापत्य योजना और शिल्पकला यह दर्शाती है कि उस समय के शिल्पकारों ने धार्मिक आस्था को स्थापत्य सौंदर्य के साथ अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया था।

इस प्रकार सिरपुर में प्राप्त हिंदू मंदिरों की विविधता यह स्पष्ट करती है कि यह नगर प्राचीन काल में शैव और वैष्णव दोनों परंपराओं का एक प्रमुख केंद्र था। यहाँ के मंदिर न केवल धार्मिक जीवन के केंद्र थे, बल्कि वे कला, संस्कृति और स्थापत्य विकास के महत्वपूर्ण प्रतीक भी थे। इन मंदिरों के अध्ययन से हमें प्राचीन भारतीय वास्तुकला की उन्नत परंपरा, शिल्पकला की उत्कृष्टता और उस समय के समाज की धार्मिक आस्थाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

बौद्ध स्थापत्य और विहार

सिरपुर केवल हिंदू धर्म के मंदिरों के कारण ही प्रसिद्ध नहीं रहा, बल्कि यह बौद्ध धर्म के अध्ययन, साधना और आध्यात्मिक गतिविधियों का भी एक महत्वपूर्ण केंद्र था। प्राचीन ऐतिहासिक साक्ष्यों और पुरातात्विक उत्खननों से यह स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में अनेक बौद्ध विहार, मठ और शिक्षण केंद्र स्थापित थे। इन संस्थानों में भिक्षु निवास करते थे और बौद्ध दर्शन, आचार और शिक्षाओं का अध्ययन तथा प्रचार-प्रसार किया जाता था। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सिरपुर प्राचीन काल में बौद्ध संस्कृति और शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

इतिहासकारों के अनुसार, सिरपुर का महत्व केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं था, बल्कि यह दूर-दराज के क्षेत्रों से आने वाले विद्वानों और यात्रियों के लिए भी आकर्षण का केंद्र रहा होगा। इसी संदर्भ में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा-वृत्तांत का उल्लेख किया जाता है। उन्होंने सातवीं शताब्दी में भारत की यात्रा के दौरान इस क्षेत्र का वर्णन किया और यहाँ बौद्ध धर्म की सक्रिय उपस्थिति का उल्लेख किया। उनके विवरणों से यह ज्ञात होता है कि उस समय इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में बौद्ध भिक्षु निवास करते थे तथा यहाँ अनेक विहार और शिक्षण संस्थान संचालित थे। यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि सिरपुर बौद्ध धर्म की दृष्टि से एक समृद्ध और प्रतिष्ठित केंद्र था।

पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त अवशेषों में अनेक बौद्ध विहारों के भग्नावशेष, बुद्ध प्रतिमाएँ, स्तूपाकार संरचनाएँ और अन्य धार्मिक अवशेष शामिल हैं। इनसे यह स्पष्ट होता है कि सिरपुर में बौद्ध धर्म की विभिन्न शाखाओं का प्रभाव रहा होगा। साथ ही यहाँ विकसित स्थापत्य शैली यह दर्शाती है कि उस समय के वास्तुकार और शिल्पकार धार्मिक भवनों के निर्माण में विशेष कौशल रखते थे।

आनंद प्रभु कुटी विहार

सिरपुर में स्थित **आनंद प्रभु कुटी विहार** बौद्ध स्थापत्य कला का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण माना जाता है। यह विहार एक विस्तृत परिसर के रूप में निर्मित था, जो उस समय के बौद्ध मठों की सुव्यवस्थित योजना और स्थापत्य कौशल को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इस विहार के अवशेषों से यह ज्ञात होता है कि यहाँ भिक्षुओं के निवास के लिए अनेक कक्ष बनाए गए थे, जो एक आंतरिक प्रांगण के चारों ओर व्यवस्थित थे।

विहार परिसर में सभा-स्थलों, प्रार्थना कक्षों तथा धार्मिक अनुष्ठानों के लिए विशेष संरचनाओं का भी निर्माण किया गया था। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह स्थान केवल निवास के लिए ही नहीं, बल्कि धार्मिक शिक्षा और आध्यात्मिक साधना के केंद्र के रूप में भी प्रयुक्त होता था। इस प्रकार के विहारों में भिक्षु बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का अध्ययन करते थे और अपने ज्ञान का प्रसार भी करते थे।

इस विहार में प्राप्त बुद्ध प्रतिमाएँ और अन्य कलात्मक अवशेष उस समय की मूर्तिकला और धार्मिक कला की उत्कृष्टता को भी दर्शाते हैं। इन मूर्तियों में शांत भाव, संतुलित मुद्रा और सूक्ष्म कलात्मकता दिखाई देती है, जो बौद्ध कला की विशिष्ट पहचान मानी जाती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सिरपुर में बौद्ध कला और स्थापत्य का विकास अत्यंत उच्च स्तर पर हुआ था।

स्वस्तिक विहार

सिरपुर में उत्खनन के दौरान प्राप्त **स्वस्तिक विहार** भी बौद्ध स्थापत्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण है। इस विहार की संरचना अपनी विशिष्ट योजना के कारण विशेष रूप से उल्लेखनीय मानी जाती है। इसकी स्थापत्य योजना स्वस्तिक आकार पर आधारित है, जिसके कारण इसे स्वस्तिक विहार कहा जाता है।

स्वस्तिक भारतीय संस्कृति में शुभता, समृद्धि और आध्यात्मिक संतुलन का प्रतीक माना जाता है। इस प्रतीक को स्थापत्य योजना के रूप में अपनाना यह दर्शाता है कि उस समय के वास्तुकार धार्मिक प्रतीकों और स्थापत्य विज्ञान के बीच गहरा संबंध स्थापित करते थे। इस प्रकार की योजना केवल धार्मिक महत्व ही नहीं रखती, बल्कि यह उस समय की वैज्ञानिक और कलात्मक सोच को भी प्रतिबिंबित करती है।

स्वस्तिक विहार के अवशेषों से यह ज्ञात होता है कि इसकी संरचना अत्यंत सुनियोजित ढंग से बनाई गई थी। इसमें भिक्षुओं के निवास कक्ष, आंतरिक मार्ग तथा अन्य उपयोगी स्थानों की व्यवस्था की गई थी। इस प्रकार की संरचना यह संकेत देती है कि उस समय बौद्ध विहारों के निर्माण में व्यावहारिक आवश्यकताओं और धार्मिक प्रतीकों दोनों का समन्वय किया जाता था।

इस प्रकार सिरपुर में प्राप्त बौद्ध विहारों और स्थापत्य अवशेषों से यह स्पष्ट होता है कि यह नगर प्राचीन काल में बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र था। यहाँ विकसित विहार न केवल धार्मिक साधना के स्थल थे, बल्कि वे शिक्षा, चिंतन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के भी महत्वपूर्ण केंद्र रहे होंगे। इन विहारों का अध्ययन हमें प्राचीन भारतीय बौद्ध स्थापत्य, धार्मिक जीवन और सांस्कृतिक विकास की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

पर्यटन की दृष्टि से ऐतिहासिक विश्लेषण

वर्तमान समय में सिरपुर केवल एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थल भर नहीं रह गया है, बल्कि यह धीरे-धीरे एक महत्वपूर्ण **विरासत पर्यटन (Heritage Tourism)** केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है। यहाँ स्थित मंदिरों, बौद्ध विहारों, मठों तथा अन्य पुरातात्विक अवशेषों के

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

कारण यह स्थान इतिहास, संस्कृति और धर्म में रुचि रखने वाले पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बन गया है। सिरपुर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्थापत्य वैभव और सांस्कृतिक विविधता इसे भारत के प्रमुख प्राचीन स्थलों की श्रेणी में स्थान प्रदान करती है।

सिरपुर में पाए जाने वाले स्मारक प्राचीन भारतीय कला और वास्तुकला के महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। यहाँ के मंदिरों की संरचना, मूर्तिकला और स्थापत्य शैली प्राचीन शिल्प परंपराओं की उत्कृष्टता को दर्शाती है। इसी प्रकार बौद्ध विहारों और मठों के अवशेष इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के प्रभाव और उसकी समृद्ध परंपरा का प्रमाण देते हैं। इन सभी ऐतिहासिक धरोहरों के कारण सिरपुर शोधार्थियों, इतिहासकारों, विद्यार्थियों तथा सामान्य पर्यटकों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण बन गया है।

पर्यटन की दृष्टि से सिरपुर का महत्व केवल इसके प्राचीन स्मारकों तक सीमित नहीं है, बल्कि यहाँ की सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी इसे विशेष पहचान प्रदान करती हैं। प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला **सिरपुर राष्ट्रीय नृत्य एवं संगीत महोत्सव** इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को व्यापक स्तर पर स्थापित करता है। इस महोत्सव में देश के विभिन्न राज्यों से प्रसिद्ध कलाकार, संगीतज्ञ और नर्तक भाग लेते हैं तथा अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। इस आयोजन के माध्यम से प्राचीन सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक कला के बीच एक सशक्त संबंध स्थापित होता है।

इस महोत्सव के दौरान देश-विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक सिरपुर पहुँचते हैं, जिससे यहाँ के ऐतिहासिक स्थलों की लोकप्रियता और अधिक बढ़ जाती है। साथ ही यह आयोजन स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और लोककलाओं को भी प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार सिरपुर न केवल ऐतिहासिक पर्यटन बल्कि सांस्कृतिक पर्यटन के रूप में भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर रहा है।

इसके अतिरिक्त सिरपुर का प्राकृतिक वातावरण, महानदी के तट का सौंदर्य और आसपास के ऐतिहासिक स्थल भी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं। यदि इन सभी विशेषताओं को व्यवस्थित रूप से विकसित किया जाए, तो यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से और अधिक समृद्ध हो सकता है।

वर्तमान चुनौतियाँ

यद्यपि सिरपुर में ऐतिहासिक और पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत व्यापक संभावनाएँ विद्यमान हैं, फिर भी इसके समुचित विकास के मार्ग में कुछ चुनौतियाँ और समस्याएँ भी दिखाई देती हैं। इन चुनौतियों का समाधान किए बिना इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल की पूर्ण क्षमता का उपयोग करना संभव नहीं है।

सबसे महत्वपूर्ण समस्या यहाँ स्थित प्राचीन स्मारकों के संरक्षण से संबंधित है। कई ऐतिहासिक संरचनाएँ समय, प्राकृतिक प्रभावों और मानवीय गतिविधियों के कारण धीरे-धीरे क्षतिग्रस्त होती जा रही हैं। इसलिए इन स्मारकों की सुरक्षा के लिए वैज्ञानिक संरक्षण पद्धतियों को अपनाने की आवश्यकता है। यदि इन धरोहरों का उचित संरक्षण नहीं किया गया, तो भविष्य में इनकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता को सुरक्षित रखना कठिन हो सकता है।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती पर्यटन सुविधाओं के विकास से संबंधित है। यद्यपि सिरपुर एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है, फिर भी यहाँ पर्यटकों के लिए पर्याप्त आधारभूत सुविधाएँ अभी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाई हैं। बेहतर सड़क संपर्क, आवास व्यवस्था, भोजनालय, सूचना केंद्र और प्रशिक्षित पर्यटन मार्गदर्शकों की उपलब्धता इस क्षेत्र में पर्यटन को और अधिक प्रोत्साहित कर सकती है।

इसके अतिरिक्त इस ऐतिहासिक स्थल के व्यापक प्रचार-प्रसार की भी आवश्यकता है। यदि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सिरपुर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाए, तो अधिक संख्या में पर्यटक यहाँ आकर्षित हो सकते हैं। आधुनिक संचार माध्यमों और पर्यटन अभियानों के माध्यम से इस स्थल की पहचान को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि यदि सिरपुर के ऐतिहासिक स्मारकों का समुचित संरक्षण किया जाए, पर्यटन अवसंरचना को विकसित किया जाए और इसके प्रचार-प्रसार को प्रभावी बनाया जाए, तो यह स्थल भविष्य में छत्तीसगढ़ ही नहीं बल्कि पूरे भारत के लिए एक प्रमुख सांस्कृतिक और विरासत पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित हो सकता है।

निष्कर्ष

सिरपुर (प्राचीन श्रीपुर) छत्तीसगढ़ के इतिहास और पुरातत्व के अध्ययन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह स्थल प्राचीन काल में एक समृद्ध नगर तथा धार्मिक-सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ था। ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक प्रमाणों से ज्ञात होता है कि विशेष रूप से पांडुवंशी शासकों के शासनकाल में श्रीपुर राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र था। इस क्षेत्र में प्राप्त मंदिर, विहार, स्तूप और विभिन्न स्थापत्य अवशेष उस समय की उन्नत कला, स्थापत्य परंपरा और धार्मिक सहिष्णुता का स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

सिरपुर की पुरातात्विक विशेषता यह है कि यहाँ हिंदू तथा बौद्ध धर्म से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण स्मारक एक ही क्षेत्र में पाए जाते हैं। लक्ष्मण मंदिर, गंधेश्वर मंदिर, आनंदप्रभु कुटी विहार, स्वास्तिक विहार तथा अन्य बौद्ध मठ यह प्रमाणित करते हैं कि सिरपुर बौद्ध धर्म के

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

अध्ययन और साधना का भी महत्वपूर्ण केंद्र रहा था। इन दोनों धार्मिक परंपराओं का एक ही स्थान पर विकसित होना उस काल की सांस्कृतिक सहिष्णुता और समन्वय की भावना को दर्शाता है।

पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त मूर्तिकला, शिलालेख, ईंट-निर्मित संरचनाएँ और स्थापत्य अवशेष इस बात का संकेत देते हैं कि श्रीपुर प्राचीन काल में व्यापार, शिक्षा और धार्मिक गतिविधियों का संगम स्थल था। यहाँ की स्थापत्य शैली में स्थानीय कला परंपराओं के साथ-साथ उत्तर और दक्षिण भारतीय स्थापत्य के प्रभाव भी दिखाई देते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह नगर व्यापक सांस्कृतिक संपर्कों से जुड़ा हुआ था।

पर्यटन की दृष्टि से भी सिरपुर का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। यहाँ स्थित प्राचीन स्मारक, मंदिर और बौद्ध विहार देश-विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसके अतिरिक्त सिरपुर में आयोजित होने वाला राष्ट्रीय नृत्य एवं संगीत महोत्सव इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह आयोजन न केवल सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण में सहायक है, बल्कि पर्यटन को भी प्रोत्साहित करता है।

फिर भी सिरपुर के समुचित विकास के लिए कुछ चुनौतियाँ मौजूद हैं। स्मारकों के संरक्षण, वैज्ञानिक संरक्षण तकनीकों के उपयोग, पर्यटन सुविधाओं के विस्तार तथा व्यापक प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है। यदि इन पहलुओं पर योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाए, तो सिरपुर को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रमुख विरासत पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सिरपुर (श्रीपुर) का पुरातात्विक महत्व केवल क्षेत्रीय इतिहास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता की बहुलतावादी परंपरा, धार्मिक सहिष्णुता और स्थापत्य कला की उत्कृष्टता का महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसके संरक्षण और व्यवस्थित अध्ययन से न केवल छत्तीसगढ़ के इतिहास को नई दिशा मिल सकती है, बल्कि पर्यटन और सांस्कृतिक विकास के लिए भी व्यापक संभावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कनिंघम, अलेक्जेंडर (1875). *आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया रिपोर्ट्स*, खंड–17. कोलकाता: आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, पृ. 25–32।
2. मित्रा, देबाला (1971). *भारत के बौद्ध स्मारक*. कोलकाता: साहित्य संसद प्रकाशन, पृ. 160–168।
3. सिंह, उपेन्द्र (2008). *प्राचीन एवं प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का इतिहास*. नई दिल्ली: पियरसन एजुकेशन, पृ. 482–486।
4. चक्रवर्ती, दिलीप कुमार (2009). *भारत का पुरातात्विक इतिहास*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 268–273।
5. शर्मा, आर. के. (2005). *इंडियन आर्कियोलॉजी – ए रिव्यू*. नई दिल्ली: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, पृ. 90–96।
6. वर्मा, आर. पी. (2016). *छत्तीसगढ़ का इतिहास एवं संस्कृति*. रायपुर: छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ. 110–120।
7. भारत सरकार (2014). *भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की वार्षिक रिपोर्ट*. नई दिल्ली: संस्कृति मंत्रालय, पृ. 72–78।
8. छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल (2019). *छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल एवं सांस्कृतिक धरोहर*. रायपुर: पर्यटन विभाग, पृ. 45–52।
9. पाण्डेय, एच. के. (2012). *छत्तीसगढ़ का प्राचीन इतिहास*. वाराणसी: भारतीय विद्या प्रकाशन, पृ. 135–142।
10. मिश्रा, एस. सी. (2015). *छत्तीसगढ़ के पुरातात्विक स्मारक*. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ. 98–105।
11. शर्मा, आर. एस. (2010). *प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान, पृ. 245–252।
12. थापर, रोमिला (2013). *प्राचीन भारत का इतिहास*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 310–318।
13. राय, निहार रंजन (1998). *भारतीय संस्कृति का इतिहास*. नई दिल्ली: मैकमिलन प्रकाशन, पृ. 188–196।
14. वाजपेयी, के. डी. (2004). *भारतीय वास्तुकला का इतिहास*. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ. 152–160।
15. श्रीवास्तव, के. सी. (2007). *भारतीय इतिहास की रूपरेखा*. इलाहाबाद: यूनाइटेड बुक डिपो, पृ. 210–218।
16. तिवारी, आर. पी. (2014). *छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक इतिहास*. रायपुर: छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ. 95–104।
17. सिंह, बी. पी. (2011). *भारतीय पुरातत्व का परिचय*. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन, पृ. 132–139।
18. पाण्डेय, राजबली (2009). *भारतीय संस्कृति के मूल तत्व*. वाराणसी: चौखंबा विद्या भवन, पृ. 275–283।
19. चतुर्वेदी, पी. सी. (2015). *भारतीय मंदिर वास्तुकला*. नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, पृ. 165–172।
20. वर्मा, बी. एल. (2018). *छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक धरोहर*. रायपुर: संस्कृति विभाग, पृ. 60–68।
21. सिंह, रामशरण (2016). *प्राचीन भारतीय समाज और संस्कृति*. पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ. 143–150।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

22. झा, डी. एन. (2005). *प्राचीन भारत का इतिहास*. नई दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, पृ. 198–205।
23. अग्रवाल, वासुदेव शरण (2003). *भारतीय कला*. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन, पृ. 120–128।
24. मिश्रा, विद्यानिवास (2008). *भारतीय संस्कृति और परंपरा*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. 210–218।
25. चौबे, कैलाश (2017). *छत्तीसगढ़ का प्राचीन इतिहास और संस्कृति*. रायपुर: लोकभारती प्रकाशन, पृ. 85–93।
26. त्रिपाठी, रामनाथ (2012). *भारतीय इतिहास की प्रमुख धाराएँ*. दिल्ली: ज्ञानदा प्रकाशन, पृ. 166–174।
27. सक्सेना, आर. के. (2019). *भारतीय कला एवं स्थापत्य*. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ. 132–140।
28. दुबे, श्यामसुंदर (2015). *छत्तीसगढ़ की पुरातात्विक धरोहर*. रायपुर: छत्तीसगढ़ अध्ययन केंद्र, पृ. 55–63।
29. पाठक, वी. एस. (2010). *भारतीय धर्म और दर्शन का इतिहास*. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन, पृ. 240–248।
30. शुक्ल, रामलखन (2018). *भारतीय संस्कृति का विकास*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, पृ. 175–182।